P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-II*October-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आदिवासी संस्कृति एवं कलाओं से प्रेरित प्रमुख समकालीन भारतीय चित्रकार

शंकर शर्मा
व्याख्याता ,
चित्रकला विभाग,
से.म.बि.राजकीय स्नात्तकोत्तर,
महाविद्यालय, नाथद्वारा

सारांश

लोक संस्कृति से जुड़े विविध पक्षों को आदिवासी और जनजाति समुदाय अपनी सहज कलात्मक समझ के अनुसार नृत्य, संगीत, मूर्ति एवं चित्रों के माध्यम से प्रकट करता आया है। आदिवासी लोक कलाएँ समृद्ध परम्परा, सम्पन्न सभ्यता एवं जीवन्त संस्कृति का इतिवृत्त है। चित्रात्मक अभिव्यक्ति के रूप में आदिवासी लोक कलाएँ जहाँ एक ओर विषयों को लेकर सहज होती हैं, वहीं माध्यम एवं तकनीकी रूप से भी अत्यंत सरल दिखाई देती हैं। प्रायः जन सामान्य से जुड़े दैनिक जीवन के क्रिया कलापों एवं धार्मिक विश्वासों की अभिव्यक्ति ही इनके विषय रहे हैं। कला के तकनीकी पक्ष के आधार पर इनका विश्लेषण करें तो ये कलाएँ अत्यन्त सरल रूप लिये दिखाई देती हैं, सरल, सजीव, जीवंत रेखाएँ, बाल सुलभ ज्यामितीय आकृतियाँ, रूढ़िबद्ध अलंकरणात्मकता एवं परम्परागत प्रतीकों से ओतप्रोत ये कलाएँ बरबस ही हर किसी का ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। ये कलाएँ अपने में निहित सरलता, सहजता एवं कलात्मक गुणों के कारण सदियों से कलाकारों का प्रेरणा स्रोत बनती आ रही हैं एवं आगे आने वाले युगों में भी कलाकारों को प्रेरणा देती रहेगी।

मुख्य शब्द : कारू–उपयोगी, चारू–ललित, परिमार्जन–शुद्धीकरण, आरास–चूना, चितेरा–चित्रकार।

प्रस्तावना

ये कलाएँ वस्तुतः समाज के जनमानस का आईना है। सदियों से अनाम–अनजाने हाथों में रचे बसे, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सहज परम्परागत ढंग से हस्तान्तरित होने वाली इन कलाओं में लोक मानस के हर्ष–उल्लास, आशा–आकांक्षा, कुंठा–संत्रास आदि मनोभावों को कल्पनायुक्त सरस अभिव्यक्ति मिलती है।[1] मिट्टी, प्राकृतिक रंगों और सहज कल्पना तथा अवधारणाओं से युक्त आदिवासी घरों की दीवारों पर जो चित्राकृतियाँ नजर आती हैं, उनमें एक तरफ बच्चों की सी मासूमियत दिखती है तो दूसरी ओर अनुभव का संसार भी प्रतिबिम्बित होता है।

चित्रात्मक अभिव्यक्ति के रूप में आदिवासी लोक कलाएँ जहाँ एक ओर विषयों को लेकर सहज होती हैं, वहीं माध्यम एवं तकनीकी रूप से भी अत्यंत सरल दिखाई देती हैं। प्रायः जन सामान्य से जुड़े दैनिक जीवन के क्रिया कलापों एवं धार्मिक विश्वासों की अभिव्यक्ति ही इनके विषय रहे हैं, फिर चाहे सुबह के समय मुर्गे की बांग हो, बरसात में मोर का नाचना हो, शादी–विवाह के अवसर पर लोक देवता की पूजा हो अथवा किसी किसान का हल जोतना हो, सभी कुछ बड़ी ही सरलता के साथ आदिवासियों के घरों एवं झोपड़ियों की दीवारों और आंगन पर चित्र रूप में उकेरा जाता रहा है। चित्र माध्यम की दृष्टि से भी इन कलाओं में स्थान विशेष से प्राप्त सामग्री का प्रयोग ही आमतौर पर किया जाता है। गाँवों में प्राप्त मिट्टी, गेरू, आरास, प्राकृतिक रंग (पत्तियों एवं वृक्षों की छाल से प्राप्त रंग) इनकी अभिव्यक्ति का मुख्य आधार बनते हैं। कला के तकनीकी पक्ष के आधार पर इनका विश्लेषण करें तो ये कलाएँ अत्यन्त सरल रूप लिये दिखाई देती हैं, सरल, सजीव, जीवंत रेखाएँ, बाल सुलभ ज्यामितीय आकृतियाँ, रूढ़िबद्ध अलंकरणात्मकता एवं परम्परागत प्रतीकों से ओतप्रोत ये कलाएँ बरबस ही हर किसी का ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं।यामिनी राय, के श्री निवासुलु,ए. रामाचन्द्रन,रसिक डी. रावल,जे. सुल्लान अली, गोवर्धनलाल जोशी आदि ऐसे ही प्रमुख भारतीय चित्रकार हैं जो आदिवासी कला एवं जीवन से प्रेरणा लेकर चित्रण कार्य कर रहे हैं, इनके कार्य में भी वही सहजता, सरलता, सादगी एवं स्पन्दन दिखाई देता है जो आदिवासी लोक कलाओं में दिखाई देता है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-II*October-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आदि ऐसे ही प्रमुख भारतीय चित्रकार हैं जो आदिवासी कला एवं जीवन से प्रेरणा लेकर चित्रण कार्य कर रहे हैं, इनके कार्य में भी वही सहजता, सरलता, सादगी एवं स्पन्दन दिखाई देता है जो आदिवासी लोक कलाओं में दिखाई देता है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान कला परिदृश्य में प्रयोगधर्मिता चरम पर है, अधिकांश कलाकार पश्चिमी कलाओं एवं कलाकारों का अनुसरण करते हुए कलाभिव्यक्ति कर रहे हैं। ऐसे समय में कुछ कलाकार ऐसे भी हैं जो अपनी संस्कृति, समाज एवं देशज कलाओं से प्रेरित है एवं इनमें निहित कलातत्वों को अपनी कलाकृतियों में स्थान देकर अपने कला संसार को समृद्ध कर रहे हैं, ऐसे कलाकारों के कलात्मक प्रयोगों को नई पीढ़ी के कलाकारों तक सम्प्रेषित करना ही इस लेख का मूल उद्देश्य है।

आदिवासी जीवन में कला के 'कारू' तथा 'चारू' दोनों ही रूपों के दर्शन होते हैं। यहाँ कला का केवल विशुद्ध रूप ही दृष्टिगोचर नहीं होता, अपितु जीवन से जुड़े हर क्षेत्र में उपयोग होने वाली वस्तुओं और लोक व्यवहार में कलात्मक अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं, सदियों से ये समुदाय लोक गीतों, नृत्यों, मृण मूर्तियों एवं दीवारों एवं बर्तनों के साथ ही शरीर पर बनाए जाने वाले चित्रों से अपनी सृजनात्मक प्रवृत्तियों का परिचय देते आ रहे हैं।

पारम्परिक मधुबनी चित्र

पारम्परिक जादू पट्ट चित्र

सरलता, जीवंतता एवं सादगी के अपने अंतर्निहित गुणों के कारण आदिवासी लोक कलाओं ने कई आधुनिक और समकालीन कलाकारों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। आज कई भारतीय चित्रकार इन कलाओं से प्रेरित होकर अपने रचना संसार को समृद्ध कर रहे हैं। इनमें जहाँ कुछ कलाकारों को आदिवासी एवं लोक जीवन की सादगी ने विषय रूप में आकृष्ट किया है तो कुछ कलाकार इन कलाओं में निहित विशुद्ध तात्विक विशेषताओं से प्रेरित होकर अपनी कला का परिमार्जन कर रहे हैं।

यामिनी राय – चित्र शीर्षक "कृष्ण एवं बलराम"

यामिनी राय आधुनिक भारतीय चित्रकला के प्रथम पीढ़ी के चित्रकार हैं। उनकी कला से प्रेरणा पाकर भारतीय चित्रकला को एक नई दिशा मिली थी, देशज रंग, रूपाकारों एवं प्रतीकों से सजी–संवरी इनकी कला में

लोक कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से द्रष्टव्य होता है।[1] 'बंगाल के बाकुंड़ा जिले की लोक शैली, विष्णुपुर एवं बांशावाटी के मन्दिरों की पकाई मिट्टी के फलक एवं उड़ीसा तथा कालीघाट के पट चित्रों का प्रभाव विशेष रूप से यामिनी राय के चित्रों पर दिखाई देता है।[2] इन्होंने बंगाल की लोक कला शैलियों के अनुशीलन से अपनी मौलिक कला शैली को जन्म दिया, जिसमें चित्रों की आकार योजना, रंग योजना, धरातलीय विन्यास तथा अलंकरण सभी में लोक कला का प्रभाव दिखाई देता है। गहरी बुझी बाहरी रेखाओं से उकेरी सपाट रंगदार आकृतियों, सरल अलंकरण एवं प्रतीकों से सुसज्जित यामिनी राय के चित्र अपने भीतर गहरी सम्वेदनाएँ एवं भावार्थ लिये रहते हैं।

ए. रामचन्द्रन ''हन्ना विद् अ मिरर''

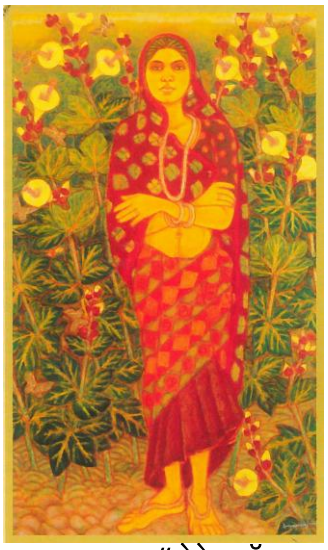

ए. रामचन्द्रन ''पोट्रेट ऑफ यमुना''

आदिवासी जीवन एवं संस्कृति से प्रेरित दूसरे महत्वपूर्ण चित्रकार अचुतन नायर रामचन्द्रन हैं। इनकी गिनती भारत के प्रसिद्ध कलाकारों में होती है। रामचन्द्रन की कला में दक्षिणी राजस्थान कि जनजातियों के प्रति विशेष आग्रह दिखाई देता है। यह कहना अनुचित नहीं होगा की राजस्थानी रंगों, रूपों एवं संस्कृति का जितना रचनात्मक प्रयोग रामचन्द्रन ने अपने चित्रों में किया है, संभवतया यहाँ के स्थानीय चित्रकार भी उतनी प्रेरणा अपनी मातृभूमि से ले पाने में सफल नहीं हुए हैं। उन्होंने दक्षिणी राजस्थान की आदिवासी जनजातियों के जीवन एवं संस्कृति को उनके साथ रहकर महसूस किया है, यहाँ के आदिवासियों के सरल सहज जीवन एवं पहनावे का गहराई से अध्ययन किया है एवं इसके सैकड़ों रेखाचित्र बनाए, जिनका प्रयोग अपने चित्रों में किया। आदिवासी स्त्रियों की शारीरिक बनावट, उनके द्वारा पहने जाने वाले परिधान एवं गहनों को बड़ी ही सुन्दरता के साथ उन्होंने अपने चित्रों में प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा बनाए गए आदिवासी स्त्रियों के 'पोट्रेट्स' में आन्तरिक भाव हूबहू चित्रित हुए हैं। 'पोट्रेट आफ यमुना' नामक चित्र इसका उत्तम उदाहरण है।[3] पृष्ठभूमि में भी आदिवासी क्षेत्रों में पाई जाने वाली वनस्पति, जीव जन्तुओं एवं पशु–पक्षियों का फंतासी युक्त रचनात्मक प्रयोग उनके चित्रों में दिखाई देता है।

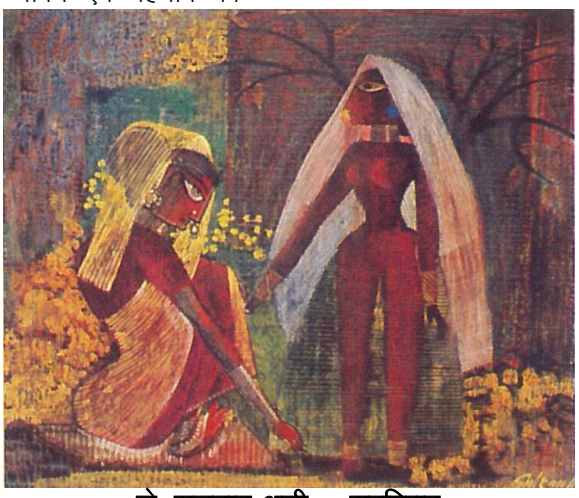

जे. सुलतान अली – सबमिशन

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-II*October-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जे. सुल्तान अली की कला में भी लोक एवं आदिवासी कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मध्य प्रदेश के बस्तर जिले की आदिवासी पुरा कथाओं तथा वहाँ की शिल्प आधारित वस्तुओं से प्रेरित उनकी कला में जहा रंग, डिजाईन एवं संयोजना में रचनात्मकता दिखाई देती है, वहीं आकृतियों के अलंकरणात्मक अभिप्राय लोक शिल्पों से प्रभावित है एवं विषय आदिवासी जीवन से लिये गए हैं।

के.श्री. निवासुलु – मछुआरीने

के. श्री. निवासुलु लोक कला रूपों की शक्ति एवं सरलता से प्रभावित हैं, उन्होंने[4] रायल सीमा क्षेत्र की सुखालिया जनजाति के जीवन तथा संस्कृति को अपना प्रेरणा स्रोत बनाया है। कोंडापल्ली तथा तिरूपति के खिलौनों तथा चमड़े की पुतलियों आदि का प्रभाव भी उनके चित्रों पर है। रंगों को लेकर श्रीनिवासुलु लेपाक्षी नामक स्थान की कला से प्रेरित हैं।[4] रेखाओं का भी अलंकरणात्मक तथा प्रवाहपूर्ण प्रयोग इनके चित्रों में दिखाई देता है।

रसिक डी रावल के आरंभिक चित्रों पर सौराष्ट्र की लोक अलंकरण शैली का प्रभाव हैं[5]। 'ग्वाला' नामक चित्र उनकी इस शैली का उदाहरण है जिसमें रंग योजना तो आधुनिक है, परन्तु रेखाएँ अत्यंत महीन, सशक्त एवं प्रभावपूर्ण हैं, चित्र का विषय ग्रामीण एवं रूप योजना अलंकरणात्मक है।

जे. स्वामीनाथन की कला काल के द्वितीय चरण में भारत की लोक एवं आदिवासी संस्कृतियों का प्रभाव तथा इनमें प्रचलित प्रतीकों का प्रयोग दिखाई देता है। स्वास्तिक, कमल, लिंग, सर्प तथा हाथ की छाप जैसे सर्वसामान्य अर्थ वाले प्रतीक कलात्मक अभिप्रायों के तौर पर स्वामीनाथन की कला में प्रयुक्त हुए हैं।[6]

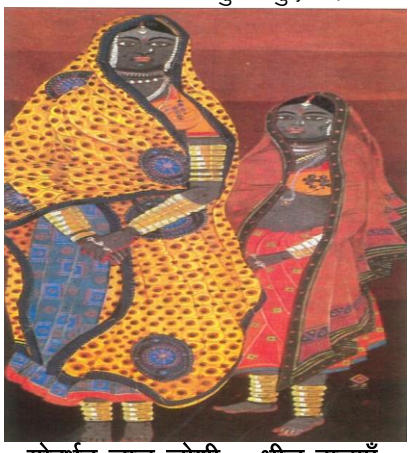

गोवर्धन लाल जोशी – भील बालाएँ

लौकिक परिवेश के सशक्त चितेरों (चित्रकारों) में राजस्थान के गोवर्धन लाल जोशी का नाम भी महत्वपूर्ण है। उनकी कला में मुख्य रूप से राजस्थान की आदिवासी भील जनजाति के जीवन तथा संस्कृति की झलक मिलती है। यहाँ तक कि उन्हें 'भीलों के चित्रकार' नाम से सम्बोधित किया जाता है। उन्होंने भील जनजाति के लोक नृत्यों पर आधारित कई चित्र बनाए हैं जिनमें नारी देह की आंगिकउलय एवं भावगत चेष्टाओं का सुन्दर अंकन है।[7] 'गवरी', 'भील बालाएँ, 'भील विवाह', 'भील जीवन की झाँकी' आदि उनके ऐसे चित्र हैं जो मेवाड़ की आदिवासी 'भील' जाति के जीवन एवं संस्कृति को दर्शकों की आँखों के समक्ष जीवन्त रूप में उपस्थित कर देते हैं। इन चित्रों में 'भील' समाज में पहनी जाने वाली वेशभूषा, गहनों और उनके दैनिक क्रिया–कलापों में प्रयुक्त होने वाले साजो–सामान का बड़ा ही गहन व सूक्ष्म चित्रण किया गया है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति की विविधता इसकी मुख्य विशेषता है। यहां की माटी अपने कण–कण में विविध रंग रूप लिये हुए है। विभिन्न जातियाँ एवं समुदायों में कलाओं के विविध रूप दिखाई देते हैं। ये कलाएँ अपने–आप में अत्यन्त समृद्ध हैं। चाहे बिहार की मधुबनी हो, कालीघाट के पट चित्र हो या फिर राजस्थानी आदिवासी संस्कृति के कलारूप, सभी अपनी रचनात्मकता में मौलिकता लिए हुए हैं। इन्ही से प्रेरणा प्राप्त कर यामिनी राय एव ए. रामचन्द्रन जैसे कलाकारों ने विश्व पटल पर ख्याति अर्जित की है। उपर्युक्त कलाकारों की भांति कई कलाकार देशज, लोक तथा आदिवासी जीवन, कला तथा संस्कृति से प्रेरित होकर चित्रण कर रहे हैं एवं परम्परा में निहित कला तत्वों को आज के प्रयोगवादी दौर में भी प्रतिष्ठित करने के प्रयास में लगे हैं। निःसन्देह ये कलाएँ अपने में निहित सरलता, सहजता एवं कलात्मक गुणों के कारण सदियों से कलाकारों का प्रेरणा स्रोत बनती आ रही हैं एवं आगे आने वाले युगों में भी कलाकारों को प्रेरणा देती रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. समकालीन कला (2000), अंक 18, ल.क.अ. प्रकाशन, पृ.सं. 26
2. गिर्राज किशोर अग्रवाल, आधुनिक चित्रकला, पृ.सं. 97
3. समकालीन कला (2002), अंक 22, ल.क.अ. प्रकाशन, पृ.सं. 12
4. गिर्राज किशोर अग्रवाल, आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृ.सं. 146
5. गिर्राज किशारे अग्रवाल, आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृ.सं. 152
6. शंकर शर्मा, भारतीय समकालीन चित्रकला में प्रतीकात्मक प्रवृत्तियाँ, शोध ग्रन्थ पृ.सं. 118
7. आभार – राजस्थान ललित कला अकादमी प्रकाशन, पृ.सं. 18